स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष

छायावाद के प्रतिनिधि कवि : जयशंकर प्रसाद

– डॉ॰ मुन्ना साह

संसार के भौतिकवाद से त्रस्त मानव प्रकृति से आत्मिक संबंध स्थापित कर असीम आनन्द की प्राप्ति करता है। संसार से पलायन और प्रकृति की छाया में सुख खोजने की प्रकृति ही साहित्य में छायावाद है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। वस्तुतः प्रसाद की समस्त रचनाओं में छायावादी शैली की प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं। आधुनिक काल का श्रेष्ठतम महाकाव्य कामायनी में छायावाद की विशेषताओं को देख सकते हैं।

1. प्रेम का उन्मुक्त चित्रण –

जयशंकर प्रसाद की प्रारम्भिक रचनाएँ लहर, झरना, प्रेम पथिक आदि सभी ग्रंथों में स्वछन्द प्रेम वर्णन प्राप्त होता है। मनु और श्रद्धा के स्वछन्द प्रेम का वर्णन कामायनी में वर्णित है –

"और एक फिर व्याकुल चुम्बन
रक्त खौलता जिससे।
शीतल प्राण धधक उठता है
तृषातृप्ति के मिस से।" (कामायनी–कर्म सर्ग से)

2. सौंदर्य का स्वच्छन्द चित्रण –

जयशंकर प्रसाद ने सौंदर्य का मानवीय, प्राकृतिक और दार्शनिक तीनों रूपों में चित्रण किया है। **मानवीय सौंदर्य –**

"नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल

मेघ, बन बीच गुलाबी रंग।"

प्राकृतिक सौंदर्य –

"संध्या घनमाला की सुन्दर
ओढ़े रंग बिरंगी छींट
गगन चुम्बिनी शैल–श्रेणियाँ
पहने हुए तुषार किरीट।"

दार्शनिक सौंदर्य –

"हे अनन्त रमणीय! कौन तुम
यह मैं कैसे कह सकता।"

3. काल्पनिकता –

प्रसाद द्वारा रचित छायावादी काव्य कामायनी में कल्पना के इन्द्रधनुषी चित्र इस प्रकार वर्णित है –

"नव कोमल आलोक बिखरता
हिम संसृति पर भर अनुराग,
सित सरोज पर क्रीड़ा करता
जैसे मधुमय पिंग पराग।"

4. स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह –

प्रसाद जी की कविता में छायावाद की यह प्रवृत्ति सर्वत्र मुखरित हुई है –

"खुली उसी रमणीय दृश्य में
आलस चेतना की आँखें,
हृदय कुसुम की खिली अचानक

मधु से वे भीगीं पाँखें।"

5. पलायनवादिता –

छायावादी कवि सांसारिक भौतिकतावाद से उबा हुआ एवं पीड़ीत दिखता है। निराशा एवं असंतोष की भावना उसे पलायनवादी बना देती है। आशा सर्ग में मनु आशा का संचार होने पर भी जीवन से पलायन करना चाहते हैं –

"तो फिर क्या मैं जिऊँ और भी

जीवन क्या करना होगा?

देव! बता दो अमर वेदना

लेकर कब मरना होगा?"

छायावादी काव्य प्रवृत्तियों के अवलोकन करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि छायावादी कवि प्रेम, सौंदर्य, प्रकृति, दर्शन एवं पलायनवादिता के कवि हैं। वस्तुतः मन को जो मोहक लगे वही सौंदर्य है और उस सौंदर्य के प्रति मन में मोह जगाना ही प्रेम है। यह भी देखा जाता है कि छायावादी कवियों द्वारा प्रकृति के मानवीकरण को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।

———————————— • • • ————————————